International Journal of Applied Research 2018; 4(3): 60-61

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(3): 60-61
www.allresearchjournal.com
Received: 18-01-2018
Accepted: 21-02-2018

डॉ0 अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ0 सान्त्वना द्विवेदी
सहायक आचार्य, संस्कृत डीएवी पीजी कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

महाभारत में पर्यावरण संरक्षण

डॉ0 अशोक कुमार दुबे एवं डॉ0 सान्त्वना द्विवेदी

सारांश
महाभारत मानव जाति के लिए विशालकाय धर्म ग्रन्थ है। जिसमें मानव–जीवन के विभिन्न अंगों का सम्यक् समावेश किया गया है। महाभारत में धर्म और नीति के आदर्श के साथ–साथ मानव जगत् एवं प्रकृति जगत् की एकात्मकता का विशद चिन्तन भी प्राप्त होता है।
महाभारत में पर्यावरण संरक्षण का विशद वर्णन प्राप्त होता है। महाभारत में वनपर्व में विदुरनीति के अन्तर्गत वृक्ष और वनस्पति के संवर्द्धन के प्रयासों के अनेक उदाहरण दिये हुए हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व में जल संरक्षण को महान धार्मिक कार्य घोषित किया गया है–
तस्य पुत्राः भवन्त्येते पादपा नात्र संशयः।
परलोकगतः स्वर्गं लोकाश्चाप्नोति सोऽव्ययान्।।

कूटशब्द : महाभारत, मानवधर्म, पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति, वृक्ष, परमात्वतत्त्व आदि।

प्रस्तावनाः
महाभारत मानव धर्म का विशालकाय ग्रन्थ रत्न है, जिसमें कौरवों एवं पाण्डवों के इतिहास वर्णन के साथ–साथ भारत के उज्जवल परम्परा प्रकाश का ज्ञानपुंज प्रकाशित है। महाभारत में मानव–जीवन के विभिन्न अंगों का सम्यक समावेश किया गया है। श्रेयात्मक एवं प्रेयात्मक स्वरूप का ऐसा कोई तत्त्व नहीं, जिसका चिन्तन इसमें न हुआ हो। व्यास जी ने महाभारत के प्रारम्भ में ही कहा है–

धर्मे चार्थे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।। [1]

महाभारत में धर्म और नीति के आदर्श के साथ–साथ मानव जगत् एवं प्रकृति जगत् की एकात्मकता का विशद चिन्तन प्राप्त होता है। समस्त प्रकृति में एक ही परमात्म तत्त्व व्याप्ति का भाव कहा गया है–

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्वदेवेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु।।
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु।। [2]

महाभारत में पर्यावरण संरक्षण का विशद वर्णन हुआ है। महाभारत में वृक्षों के महत्त्व को अनेक स्थल पर देखा जा सकता है। इसके अन्तर्गत महाभारत के वनपर्व में विदुरनीति के अन्तर्गत वृक्ष और वनस्पति के संवर्द्धन के प्रयासों के अनेक उदाहरण दिये हुए हैं। वनस्पतियों के अनेक प्रकारों का वर्णन है। वनस्पति प्रकार के सन्दर्भ में कहा गया है–

वनस्पतेरपक्वानि फलानि प्रचिनोति यः।
स नाप्नोति रसं तेभ्यो बीजं चास्य विनश्यति।।
यस्तु पक्वमुपादत्ते काले परिणतं फलम्।
फलाद्रसं स लभते बीजाच्चैव फलं पुनः।। [3]

महामनस्वी विदुर लोगों को उपदेश देते हैं कि–जिस प्रकार भ्रमर पुष्पों का रस लेकर उनसे मधु प्राप्त करता है, न तो पुष्प को कोई क्षति पहुँचती है और भौरों को भी अपना भोजन प्राप्त हो जाता है।

उसी प्रकार का व्यवहार हम लोगों को भी प्रकृति के प्रति करना चाहिए अर्थात् हम प्रकृति से उतना ग्रहण करें कि इससे प्रकृति को कोई क्षति न हो और हमारी जरुरत भी पूरी हो जाये। हम पौधों से पुष्पों का संचयन तो करें परन्तु उन्हें समूल नष्ट करने का प्रयास कदापि न करें–

यथा मधु समादत्ते रक्षन्पुष्पाणि षट्पदः।
तद्वदर्थान् मनुष्येभ्य आदघादविहिंसया।।
पुष्पं पुष्पं विचिन्वीत मूलच्छेदं न कारयेत्।
मालाकार इवारामे न यथाङ्गुकारकः।। [4]

महाभारत के अनुशासन पर्व में जल–संरक्षण को महान धार्मिक कार्य घोषित करते हुए देश या ग्राम में एक तालाब के निर्माण को धर्म–अर्थ–काम तीनों का फल देने वाला बताया गया है–

तस्य पुत्राः भवन्त्येते पादपा नात्र संशयः।
परलोकगतः स्वर्गं लोकांश्चाप्नोति सोऽव्ययान्।। [5]

तथा अपने द्वारा खुदवाये तालाब के किनारे अच्छे–अच्छे वृक्ष लगाकर, उनका पुत्र के समान पालन करने के लिए कहा गया है–

तस्मात् तडागे सद्वृक्षा रोप्याः श्रेयोऽर्थिना सदा।
पुत्रवत् परिपाल्याश्च पुत्रास्ते धर्मतः स्मृताः। [6]

महाभारत के वन पर्व में वन विषयक अत्यधिक उल्लेख मिलता है। यहाँ वनों में कथा का पल्लवन हुआ और स्वयं वन सृष्टि पात्रों की भाँति उपस्थित होकर अपनी भूमिकाएँ प्रस्तुत करती हैं। महाभारत के द्वैतवन, काम्यक वन, खाण्डव वन, कदलीवन, सौगन्धिकववन, लोध्रवन, भयंकरवन, दिव्यवन आदि अपने–अपने मोहक स्वरूप के साथ पात्र के रूप में सामने आते हैं।
हमारी आर्य संस्कृति, वनों के इस मोहक स्वरूप के प्रति इतनी आकर्षित हुई कि यहाँ के लोगों ने प्रकृति की गोद को ही अपनी आश्रय–स्थलली बनाया तथा वन प्रदेश को ही आश्रम बनाकर प्रकृति के सानिध्य का लाभ उठाते हुए तपोमय जीवन बिताने लगे। (महा/अनु0/42/13–14) बृक्ष में भी आत्मा और प्राण तत्त्व होने की बात स्वीकार की गई है और उनके प्रति आत्मवत् व्यवहार को महत्व प्रदान किया गया है। महर्षि वेदव्यास ने अनेक तर्कों द्वारा वृक्षों में चेतना का होना माना–

सुखदुःखयोश्च ग्रहणच्छिन्नस्य च विरोहणात्।
जीवं पश्यामि वृक्षाणामचैतन्य न विद्यते।। [7]

मोक्ष पर्व में वृक्षों को मनुष्य के समान चेतन एवं भावनाशील बताते हुए बीमार पड़ने पर उन पर दवा छिड़कवाने के लिए कहा गया है (महा./भा./मोक्ष/184–11–16)। मनुष्यों के लिए पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि एवं स्वस्थ जीवनी शक्ति प्राप्त करने के लिए वृक्षारोपण को परमावश्यक बताया गया है। अनुशासन पूर्व के 58वें अध्याय में विशेष रूप से 23वें से लेकर 32वें श्लोक तक वृक्षारोपण के महत्त्व को बताया गया है। यथा–

एता जात्यस्तु वृक्षाणां तेषां रोपे गुणास्त्विमे।
कीर्तिश्च मानुषे लोके प्रेत्य चैव फलं शुभम्।।
अतीतानागते चोभे पितृवंश च भारत।
तारयेत् वृक्षरोपी च तस्माद् वृक्षांश्च रोपयेत्।। [9]

वृक्षों के वैशिष्ट्य को भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं गीता में कहा है–

अहं क्रतुः अहं यज्ञः स्वाधाहमदृमौषधम्।

इसी तरह परम ज्ञानी भीष्म ने युधिष्ठिर को वृक्षों की महत्ता को उपदेश दिया है। वृक्षों के रोपण का महत्त्व बतलाने हेतु पीपल, वट आदि वृक्षों को लगाने से जगत् में असीम सम्मान प्राप्त होने की बात कही है–

अर्श्वथं रोचनां गां च पूजयेद् यो नरः सदा।
पूजितं च जगत् तेन सदेवासुरमानुषम्।। [10]

भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को वृक्ष न काटने का स्पष्ट आदेश दिया गया है। हे युधिष्ठिर! तुम्हारे राज्य में भी भक्ष्य फलों एवं वनस्पतियों को न काटे। उनके मूल और फल ब्राह्मण के धन होते हैं। मूलों और फलों से ब्राह्मणों का धर्मकार्य निष्पन्न होता है–

वनस्पतीन् भक्ष्यफलान् न च्छिन्द्युविषये तव।
ब्राह्मणानां मूलफलं धर्म्यमाहुमनीषिणः।। [11]

इसी प्रकार भीष्म, युधिष्ठिर को वृक्षों को न काटने एवं उनका महत्त्व बताते हुए कहते हैं–हे युधिष्ठिर! राजा महावृक्ष के समान ही उत्पन्न होता है और बढ़ता है। सभी प्राणी उसी का आश्रय करते हैं। यदि महावृक्ष के समान राजा को काटे जाने या जलाए जाने का प्रयास किया जाता है तो उस पर आश्रित सभी गृह विहीन हो जाते हैं। यथा–

महान् वृक्षो जायते वर्धते च तं चैव भूतानि समाश्रयन्ति।
यदा वृक्षाश्छिद्यते दह्यते च तदाश्रया अनिकेता भवन्ति।। [12]

आधुनिक परिवेश में पर्यावरणवादियों का एक सिद्धान्त है कि यदि जंगल को सुरक्षित रखना है तो बाघों को बचाना भी आवाश्यक है। यह सिद्धान्त इसी रूप में हमें महाभारत के उद्योग पर्व (5/29/53–64) में मिलता है। जहाँ कहा गया है कि पुत्रों सहित राजा धृतराष्ट्र वन हैं और पाण्डव उसमें निवास करने वाले व्याघ्र। सिंहों से संरक्षित वन नष्ट नहीं होता और वन में रहकर सिंह सुरक्षित रहता है। अतः राजा वन का उच्छेद न करें।
वस्तुतः मानव जीवन का अस्तित्व तभी तक सुरक्षित है जब तक हमारा सम्पूर्ण पर्यावरण संतुलित एवं शुद्ध है। यह शुचिता तभी प्राप्त हो सकती है जब हम किसी प्राणी को नष्ट न करें , वृक्षों का उच्छेद न करें तथा सभी चराचर के प्रति प्रेमभाव का व्यवहार रखें।
महाभारत में पर्यावरण परिवेश की शुद्धता के लिए सर्वत्र प्रेम के प्रसार और शान्ति के अभ्युदय के लिए अहिंसा मूलक धर्म का प्रतिपादन किया गया है।

अहिंसा परमो धर्मः सर्वप्राणभृतां वर।
तस्मात् प्राणभूतः सर्वान् न हिंस्याद् ब्राह्मण क्वचित्।। [13]

इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण करना मानव का परम् कर्त्तव्य है, जो सम्पूर्णतया मानव विकास में सहयोगी है।

सन्दर्भ :

1. महा. 1/62/56
2. महा./भी.प./गी. 6/8–9
3. महा./उद्यो.प/34/15–16
4. महा./उद्यो./34/16–18
5. महा./अनु./58/26
6. महा./अनु./मो./184–17
7. महा./शा./मो./184–17
8. महा./अनु./58/24, 26
9. गीता/9/16
10. महा. 13126.5–6
11. महा./शा./राजधर्मानुशासन प. 19/1
12. महा./शा.प./91/26
13. महा./आदि./11/13